

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं ।

॥ ॐ ॥

मिर्च के गुण तथा उसके उपयोग

सम्पादक :

अमोलचन्द्र शुक्ला 'सोमरस'

भूतपूर्व सम्पादक [चांदनी मासिक व]
[चित्रकार साप्ताहिक] दिल्ली

प्रकाशक :

देहाती पुस्तक भण्डार,

चावड़ी बाजार, देहली ६ ।

मूल्य III=)

मूल्य चौदह आने

प्रकाशक :

देहाती पुस्तक भण्डार,

चावड़ी बाजार,

दिल्ली ।

छप कर तैयार हैं

फिटकरी के गुण	२॥)	मिरच के गुण	१॥)
बांसा " "	१)	शहद " "	२)
आक " "	२॥)	नमक " "	॥)
रीठा " "	१)	सोंफ " "	१॥)
नीम " "	१)	तुलसी के गुण	१)
आम " "	२)	बबूल के गुण	१=)
नीबू " "	१)	बादाम "	

मुद्रक:

त्यागी फाइन आर्ट प्रेस,

कटरा खुशहाल राय,

देहली ।

मिर्च के गुण तथा उपयोग

मिर्च का महत्व, गुण, भेद व नाम आदि

लाल मिर्च—लाल मिर्च की भारत में लगभग हर स्थान पर उपज होती है ।

भेद—लम्बाई गोलाई और रंग के अनुसार इसकी सात किस्में वर्णन की जाती हैं । जिनमें से वह मिर्च बहुत तेज होती है, जो बिल्कुल छोटी २ होती हैं । जिन्हें प्रायः जौ मिर्च के नाम से पुकारा जाता है ।

कहते हैं कि पहले भारत में मिर्च से तरकारी बनाने की प्रथा ही न थी, और यह दक्खिनी मरहटों ने भारत में आकर प्रथा डाली ।

गुण—गर्म व शुष्क तीसरे नम्बर की है । कुछेक ने चौथे नम्बर की बताई है । खोज से पता चला है कि जितनी ही मिर्च अधिक तेज होती है उतनी ही गर्म होती है ।

नाम—अरबी में फुलफिल अहमर, फारसी में फुलफिल सुख, हिन्दी में लाल मिर्च, संस्कृत में कटवीरा, मरहट्टी में लाल मिर्च और अंग्रेजीमें काइनपीरके नामसे प्रसिद्ध है ।

काली मिर्च—काली मिर्च के दो प्रकार के पौधे मिलते हैं जिन में एक तो बेल की प्रकार का होता है जिसके पत्ते पान की भांति किन्तु जरा छोटे होते हैं ।

(२) दो तीन हाथ ऊँचा पौधा होता है जिसके पत्ते मकू के पत्तों की भांति किन्तु उससे जरा लम्बे, और चौड़ाई में जरा कम होते हैं । लगभग लाल मिर्च के पत्तों से मिलते जुलते हैं । मिर्चें गुच्छों के रूप में लगती हैं एक गुच्छे में बीस के लगभग मिर्चें लग जाती हैं ।

गुण—गर्म व शुष्क तीसरी श्रेणी की है अर्थात् लाल मिर्च की समगुणीय है ।

नाम—अरबी में फुलफिल असद, फारसी में पिलपिल गिर्द, संस्कृत में मार्च, मस्मिर्च, बंगाली में गोल मिर्च अंग्रेजी में ब्लैकपीर हिन्दी में काली मिर्च के नाम से प्रसिद्ध है ।

दो परम लाभप्रद व प्रशंसनीय उपहार

स्वादिष्ट पाचक मिर्चें नं० १

जो कि पाचक और गुणकारी होने के अतिरिक्त स्वादिष्ट भी असीम होती है ।

योग—काली मिर्च २० तोला चीनी के पात्र में डालकर उसपर नमक लाहौरी ५ तो० सूक्ष्म पीस कर डालें। और उसपर ५ तो० गंधक का तेजाब और २० तोला नींबू का रस डालकर चीनी के प्याले से ढक कर रख दें। और जब सारा पानी आदि मिर्चों के अन्दर शोष्ण हो जाय और मिर्चें बिल्कुल शुष्क हो जायं, तो शीशी में सुरक्षित रख लें।

सेवन विधि—भोजन के उपरांत ५ से ७ मिर्च खाया करे ईश्वर कृपा से शीघ्र ही भोजन को पचा देती है और खाने में अति स्वादिष्ट होती है।

अन्य लाभ—उदरशूल, पीड़ा, भूख न लगना आदि के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

अद्भुत मिर्चें नं० २

जो कि उदरपीड़ा व शूल के लिए अनुपम दवा है एक इन्द्रायण में जितनी चाहें मिर्चें भर दें। उसको मिट्टी से सम्पुट करके चूल्हे के निकट दवा दें जिससे जल न जाय और सप्ताहोपरान्त निकाल लें। तथा छाया में सुखाकर सुरक्षित रखें।

सेवन विधि व लाभ—आवश्यकता के समय ३-४

या ५-७ मिर्चें चबावें । भूख को अत्यधिक बढ़ाती हैं
और मल को साफ कर देती हैं ।

शक्ति के इच्छकों के लिए अनुपम भेट

पौष्टिक मिर्चें नं० ३

(श्री मौ० करीमवरुश साहब द्वारा)

एक वृद्ध सज्जन यही चमत्कारी मिर्चें बनाते थे । इन मिर्चों के खाने से इस कदर शक्ति उत्पन्न होती थी वि लोग इन्हें चमत्कारी मिर्चें कहा करते थे । यद्यपि उक्त सज्जन योग बतलाने के लिये किसी प्रकार भी राजी न होते थे तथापि बड़ी कठिनता से हमने योग प्राप्त कर ही लिया ।

योग—साबत काली मिर्च ५ तोले चीनी के पात्र में रख दें । और सोमलखार १ तोला बारीक पीस कर उनपर छिड़क दें और उसके ऊपर ताजा कागजी नीबू निचोड़ कर प्याले पर मलमल का रुमाल ढककर धूप में रख दें । जब नीबू का रस शुष्क हो जाय तो और डाल दें । यहाँ तक कि ४० नीबू का रस शोष्ण हो जावे । फिर इन मिर्चों को ताजा पानी से धोकर और सुखा कर रख दें । बस चमत्कारी मिर्चें तैयार हैं । निम्न विधि से सेवन करें ।

सेवन विधि—१ से ३ मिर्च तक खाया करें ।
केवल भोजन करने के उपरांत ।

लाभ—परम शक्तिप्रद, पाचक, चेहरे की रंगत को लाल बनाने वाली और प्रशंसनीय है । परीक्षा करें ।

सिर के रोग

सिर के जिन २ रोगों के लिए लाल या काली मिर्च लाभप्रद सिद्ध होती हैं उनका वर्णन चिकित्सा सहित निम्न पंक्तियों में किया जाता है ।

आधा शीशी

आधे सिर की पीड़ा के लिए हल्दी व फटकरी के गुण तथा उपयोग, पुस्तकों में कई योग लिखे गए हैं यहां दो चुटकले और लिखे जाते हैं, जोकि प्रायः सिर रोगों में लाभप्रद हैं ।

आधाशीशी निवारक लेप नं० ४

काली मिर्च को पानी में पीसकर पीड़ा के दूसरी ओर लेप करें अर्थात् यदि पीड़ा दाईं ओर हो तो बाईं ओर और यदि बाईं ओर हो तो दाईं ओर लेप करें । इस क्रिया द्वारा ईश्वर कृपा से आधे सिर की पीड़ा दूर हो जाती है ।

(देश उपकारक)

नस्य औषधि नं० ५

काली मिर्च को घी में घिस कर सुंधाने से आधा-शीशी को तत्काल आराम हो जाता है ।

मर्दन तैल नं० ६

गाय का घी ५ कड़ही आदि में डालकर आग पर रखें, जब पकने लगे तो उसमें ७ नग लाल मिर्च डालकर जलालें और मस्तक व कनपटियों पर मालिश कराएं ।

प्रतिश्याय (नजला व जुकाम)

नजला व जुकाम दोनों बड़े ही भयङ्कर हैं वैद्यों ने इन्हें समस्त रोगों की जड़ कहा है । क्योंकि इनके विगड़ जाने के कारण सचमुच ऐसे असंख्य रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिनका नाम सुनकर ही मनुष्य घबरा जाए ।

प्रतिश्याय नाक्षक सन्यासी प्रयोग नं० ७

प्रत्यक्षतः यह एक झूठा सा चुटकुला है, किन्तु अनुभव करने वाले लोग इसे परम लाभप्रद बताते हैं ।

योग—सफेद मिर्च २१ नग प्रति दिन प्रातःकाल गर्म पानी से निगल लिया करें । ईश्वर कृपा से इससे पुराने से पुराना रोग भी एक सप्ताह में मिट जायेगा । अपित

फिर उसका आक्रमण शीघ्र न होगा ।

स्वादिष्ट चटनी

जिससे पसीना आकर ईश्वरेच्छया तत्काल लाभ होता है । आम तौर पर अंग्रेजी पढ़े हुए बाबू लोगों का यह विचार है कि जिस प्रकार अंग्रेजी औषधियां शीघ्र प्रभावक होती हैं उस प्रकार देशी औषधियों का प्रभाव शीघ्र प्रकट नहीं होता । अतः एन्टी फेब्रीन व फिनास्टीन आदि ऐसी वस्तुएं हैं जिनके खाते ही पसीना आने लगता है किन्तु इन लोगों को यह ज्ञात नहीं कि देशी दवाओं में भी ऐसी अनेक वस्तुएं विद्यमान हैं । जोकि फिनास्टीन आदि की भांति शीघ्र ही पसीना ले आती है और फिर आनन्द की बात यह है कि अंग्रेजी दवाइयों के भांति हृदय को दुर्बल नहीं करती हैं । अतः एक योग हमने (सौंफ के गुण तथा उपयोग) पुस्तक में ऐसा लिखा है, जिसके खिलाते ही पसीना आकर ज्वर उतर जाता है । अब एक योग आगे लिखते हैं ।

स्वादिष्ट चटनी का योग नं० ८

मुनक्के २ तो० लेकर उनके बीज निकाल डालें और उनके बीजों के बराबर संख्या में काली मिर्चें डालकर

खरल या कूंडे आदि में पानी के साथ खूब घोटें भली भांति घुट जाने पर उसमें पाव भर पानी डालकर मन्द २ आग पर पकावें । जब सारा पानी जलकर कबाम गाढ़ा सा हो जाय तो उतार कर नजला या सिर पीड़ा के रोगी को समोष्ण ही चढाये और रोगी को आदेश कर दें कि अपने सारे शरीर पर लिहाफ या कोई गरम कपड़ा ओढ़कर दवा को चारों बस थोड़ी देर में ईश्वर कृपा से पसीना आकर नजला जुकाम या सिर पीड़ा को दूर कर देगा । किन्तु ठंडी हवा और ठंडे पानी से बचना चाहिए ।

तदनुसार अन्य योग नं० ६

मेरे कृपालु मामा श्री मो० मुअजुद्दीन सा० बजाय मुनक्के में मिलाने व पानी में घोटने के काली मिर्च को कूट कर गुण में मिलाकर रोगी को लिहाफ ओढ़कर खाने का आदेश देते थे तात्पर्य यह है कि दोनों प्रकार से काली मिर्च का प्रभाव लाभप्रद होता है ।

अर्द्धाङ्ग व अदिति नं० १०

अर्द्धाङ्ग व अदिति दोनों बहुत बड़े रोग हैं इनके लिए एकविशेषानिविशेष योग आगामी पृष्ठों में कहीं लिखा गया है वहां देखकर तैयार करें । स्मरण रहे कि शिगरफ

भस्म और योग के सेवन कराने के दिनों में कबूतर का मांस खाने को दें। क्योंकि कबूतर का मांस भी उसकी एक निश्चित दवा है।

नेत्र रोग

मिर्च और नेत्र रोगों के लिए लाभप्रद हो, यह एक अद्भुत सी बात है लेकिन प्रख्यात हकीमों ने मिर्च को किन्हीं किन्हीं नेत्र रोगों के लिए हितकर बताया है। अतः नीचे उनका वर्णन किया जाता है।

मोतियबिन्दु के लिए अद्भुत जड़ी न ११

यह रोग हकीम श्री रामसाहब ऐडीटर रिसाला हिकमत तिब्बती ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है आवश्यक जन परीक्षा कर देखें।

योग—लाल मिर्च के ऐसे पौधे को प्राप्त करें जो कि २० साल से कम आयु का न हो फिर उसकी जड़को निकाल कर रेत मिट्टी आदि साफ करके सुरक्षित रखें। आवश्यकता पड़ने पर रात के समय पत्थर के साफ डुकड़े पर कुछ बून्दें पानी की डालकर जड़ से घिसें, और सलाई पर थोड़ी सी लगा कर आंख में लगाने का आदेश दें। आशा है कि मोतिया बिन्दु दूर हो जायगा।

नोट—चूँकि यह दवा तेज अवश्य होगी इसलिए खूब सोच समझ कर थोड़ी सी लगानी चाहिए ।

रतौंधा की सुगम औषधि नं० १२

इस रोग का रोगी दिन में भला चंगा रहता है लेकिन रात को बिल्कुल नेत्र हीनों की भांति हो जाता है अतः बिल्कुल सुगम टोटका अंकित किया जाता है ।

योग—काली मिर्च को मुंह में चबाकर थोड़ा साथूक सलाई पर लगाकर रोगी की आंख में डालें, ईश्वर कृपा से गिनती के दिनों में लाभ होगा, किन्तु रोगी को योग की वास्तविकता न बतायें ।

दन्त रोग

दाढ़ पीड़ा के लिए जादू

मैंने किसी संन्यासी के यात्रा वर्णन में पढ़ा था कि एक बार एक दाढ़-पीड़ा का रोगी उनके पास लाया गया तो संन्यासी जी ने एक दवा को सूक्ष्म पीस कर पानी भिला कर उसके कान में डाल दिया । जिससे ईश्वरेच्छा तत्काल थम गई । इसी प्रकार जनावर खा बहादुर मौ० सरदारअली खाँ सा० डी० एस० पी० हमारे यहाँ पधारे तो आपने भी वही प्रयोग किया, जिससे तत्काल पीड़ा दूर हो गई ।

चूंकि दोनों सज्जनों का एक ही योग था, अतः नीचे लिखा जाता है, जिसे देहाती एकौषधि चिकित्सा में भी लिख चुके हैं ।

कान में दवा डालो-दाढ़ पीड़ा दूर नं० १३

लाल मिर्च को पानी में डालकर खूब घोंटें । जब बिल्कुल एक जान हो जाय, तो कपड़े में से छानकर थोड़ा गर्म करें और रोगीसे यह पूछ करके, कि पीड़ा किस ओर की दाढ़ में है, दूसरी ओर के कान में डाल दें । तत्क्षण ईश्वर कृपा से पीड़ा वन्द हो जायगी । यदि ईश्वर न करे कान में पीड़ा होने लगे, तो कान में जरा सा गरम करके घी डाल दें । ठीक हो जायगी ।

दाढ़-पीड़ा निवारक तैल नं० १४

यदि मिर्च को पानी में घिसकर डालने से तविअत हिचकिचाती हो, तो उसका तेल बनाकर डालें । विधि आगोमी पृष्ठ पर दी गई है, जो कि कर्ण-पीड़ा के लिए भी अकसीर है ।

कर्ण रोग

कान के असंख्य रोगों में जिन कुछ एक रोगों के लिए

मिर्च लाभप्रद है, उनका वर्णन व चिकित्सा नीचे की पंक्तियों में किया जाता है।

कर्ण पीड़ा

कान की पीड़ा, मस्तिष्क के निकट होने के कारण, अति कष्टदायक होती है, अस्तु इसके रोगी की दशा दयनीय हो जाती है। रोगी खाने पीने अपितु बोलने से भी विवश हो जाता है।

कर्ण-पीड़ा के लिए अक्सीरी तैल नं० १५

तिलों का तेल ३ तो० को लोहे की कड़ाही आदि में डालकर अंगारों पर रखें। जब तेल पकने लग जावे, तो उसमें १ नग लाल मिर्च डाल दें। और उसके काली हो जाने पर छान कर शीशी में सुरक्षित रखें।

आवश्यकता के समय पीले तेल को गर्म करके कुछ बून्दे कान में डालें। ईश्वर कृपा से पीड़ा अति शीघ्र दूर हो जायगी।

नोट-नं० १६

इस तेल के कानमें डालने से न केवल कान की पीड़ा दूर हो जाती है, वरन् इससे दाढ़ पीड़ा भी बन्द हो जाती है। विधि यह है कि जिस ओर की दाढ़ में पीड़ा हो, दूसरे ओर के कान में उपरोक्त तेल डाल दें।

कण्ठ व सीना के रोग

कण्ठ के घाव-नं० १७

योग—१ नग लाल मिर्च को पानी में बडालकर छान लें और उसमें निश्चित शहद मिलाकर रोगी को कहें, कि वह इससे गरारे करे। यद्यपि एकवार थोड़ी सी जलन व चुभन प्रतीत होगी, किन्तु ईश्वर कृपा से निश्चय ही आराम हो जायगा।—(खजायन)

स्वर को मधुर बनाने वाली गोलियां-नं० १८

योग—लाल मिर्च ३ नग, बादाम की मिंगी ३ नग मिश्री २ मा०, बबूल का गोंद २ मा०, सबको पीस कर गोलियाँ बना लें, और दिन में दो एक बार मुंह में रखकर चूसा करें। इससे आवाज वारीक और सुरीली हो जाती है। वन्द स्वर खुल जाता है।

मुंह के छाले-नं० १९

मुंह के छाले बहुत कष्टदायक रोग हैं। इसके रोगी को नमक मिर्च से तो वंचित ही होना पड़ता है। किन्तु यह यथार्थ बात है, कि मिर्च इस रोग के लिए भी लाभप्रद है। यद्यपि पहिले थोड़ा कष्ट अवश्य होता है, अतः नीचे हम एक बड़े हकीम का बताया हुआ योग लिखते हैं:—

लाल मिर्च १ तोला को सूक्ष्म पीसकर रखें। फिर १ पाव पानी को आग पर रख कर पकावें। जब पानी खौलने लगे, तो उसमें पिसी हुई मिर्च डाल दें और एक दो उबाल आ जाने पर उतार लें। तथा ठंडा होने पर छानकर बुझियाँ कराएं। ईश्वर कृपा से निश्चय ही लाभ हो जायगा।

कफ निकालने वाली चटनी-नं० २०

काली मिर्च को सूक्ष्म पीसकर शहद मिलावें, और रोगी को दिन में कुछेक बार चटाएं। इससे सीना व फेफड़े की हवाई नालियों के भीतर जमा हुआ कफ सरलता से निकल जाता है।

खांसी के लिए मीठी टिकियां-नं० २१

काली मिर्च १ तोला को खूब बारीक करके उसमें ५ तोला गुड़ मिलाकर कूटें और १-१ मा० को टिकियाँ बनावें। इनको दिन में २-३ बार चूसते रहने से खांसी को लाभ हो जाता है।

आमाशय के रोग

मिर्च का अधिक सेवन करना आमाशय के लिए अत्यधिक हानिकर है। किन्तु इससे गलत अनुमान न

लगाले, कि मिर्च हर दशा में आमाशय के लिए हानिकाक वस्तु है। क्योंकि यह नियम है, जिस पर होमियोपैथिक वाले बड़ी सख्ती से क्रियात्मक हैं, कि जिस वस्तु की अधिकता शरीर को हानि पहुँचाए, वही उससे उत्पन्न रोगों के लिए लाभप्रद भी होती है। उदाहरणार्थ किसी स्वस्थ व्यक्ति को कुनीन अधिक मात्रा में दे दी जाय, तो वह शरीर में ज्वर सा पैदा कर देती है, किन्तु वही ज्वर के लिए अद्वितीय औषधि है।

इसी प्रकार शिंगरफ, पारा, रसकपूर, आदि यदि स्वस्थ व्यक्ति को खिलाएँ तो शरीर को विकृत कर देती हैं, किन्तु यह भी छुपी हुई बात नहीं है, कि जिनका शरीर उपदंश आदि से विकृत हो चुका हो, उनके लिए उत्तमोत्तम औषधि भी है। तात्पर्य यह कि जहाँ मिर्चों की अधिकता आमाशय को दूषित कर देती है, वहीं इसे वैद्यक ढंग से प्रयोग करना आमाशय के लिए लाभप्रद भी है। अस्तु हम आमाशय के कुछेक रोगों का वर्णन चिकित्सा सहित लिखते हैं। ध्यान पूर्वक देखिये:—

(१८)

विशूचिका [हैजा]

वह भयङ्कर रोग है—जिससे लाखों प्राण चले जाते हैं—

यह वह रोग है, जिससे देश का बच्चा २ परिचित है, क्यों कि इससे लाखों भले चंगे पुरुष जो रात को स्वस्थ सोए—प्रातः बीमार होकर—शाम से पहिले पहिले घर की चहल पहल और बाल बच्चों की रौनक से मुंह मोड़ कर संसार से चले जाते हैं ।

यद्यपि सरकार ने इस रोग के पंजे से बचने के लिए बहुत कुछ प्रयत्न किए हैं, किन्तु फिर भी अभागे भारत को अभी इससे मुक्ति नहीं मिली । मैं जिद और हठधर्मी के आधार पर नहीं, वरन् नितान्त सत्यवात को प्रकट करते हुए कहता हूँ, कि डाक्टरों को विशूचिका का कोई विशेष योग अब तक नहीं मिला । हां यूनानी हकीमों के पास इसके अच्छे २ योग है, जिनसे असंख्य मरणासन्न रोगी भी आश्चर्य जनकरूप से स्वस्थ हो जाते हैं । अस्तु हमने अपने अनुभूत कई योग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' प्रथम भाग में लिख दिए हैं । कुजेक योग 'देहाती एकौ-पधि चिकित्सा' 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' व 'सन्यासी

(१६)

चिकित्सा शास्त्र' में भी ऐसे हैं कि वस अचूक रामबाण सपभो जो कि ईश्वर कृपा से मुर्दों में जान डालने वाले नहीं तो मरते हुए रोगियों में जान डालने वाले अवश्य है। अब हम यह शुभ समाचार आपके कानों तक पहुंचाना चाहते हैं कि मिर्च हैजा के लिए एक महान लाभप्रद वस्तु सिद्ध हुई है, जिस पर हकीम और वैद्य, सभी आसक्त हो रहे हैं, अस्तु अब आगे मिर्च को हैजा रोगमें सेवन कराने की विधियाँ लिखी जाती हैं।

मिर्च द्वारा हैजा का शर्तिया इलाज

हैजा की अक्सीरी गोलियाँ नं० २२

लाल मिर्च के बीज पृथक् करके लाल २ छिलका इकट्ठा कर लें। और सूज्म पीसकर कपड़े छानकर लें। फिर थोड़ा सा शहद मिलाकर रत्ती २ की गोलियाँ बना लें। वस अक्सीरी गोलियाँ तैयार हैं।

सेवन विधि—मात्रा २ गोलियाँ बिना पानी आदि की सहायता के निगलवा दें। ईश्वर कृपा से १० मिनट में रोगी को पसीना आना बन्द होकर शरीर और हृदय की गर्मी बढ़नी आरम्भ हो जायगी। अपितु अधिकतर रोगियों को तो ज्वर भी हो जाता है।

नोट—यह दवा उस समय लाभ दिखाती है, जब कि रोगी अत्यधिक दुबेल होकर उसका शरीर नितांत ठंडा हो गया हो। नब्ज बिल्कुल क्षीण हो गई हो, अर्थात् कि निराशजनक दशा हो गई हो। ऐसे समय में मिर्च एक उत्तम का काम देती है।

अन्य उत्तम वटी नं० २३

जो कि हैजा की अन्तिम दवा है।

पावभर लाल मिर्च को कूट कर सेर भर पानी में रात को भिगोएं और प्रातः मन्द आँच पर पकाएं। जब ३ पाव पानी जलकर केवल पावभर शेष रह जाय, तो उतार कर छान लें। और इस छने हुए पानी को पुनः पकाएं। जब वह पानी गाढ़ा हो जाय, तो रत्ती २ की गोलियाँ बना लें। यह हैजा की अन्तिम श्रेणी की दवा है।

सेवन विधि—हैजा के रोगी को १ गोली घंटे २ के अन्तर से पानी के साथ या सूखी ही देते रहें। ईश्वरानुकम्पा से निश्चित ही आराम हो जायगा और हैजा ग्रस्त रोगी के प्राण बच जायेंगे। (अमृत)

निराशा में आशा की भलक

लाल मिर्च का दिव्य गुण नं० २४

जब हैजा ग्रस्त रोगी की नब्ज बन्द सी हो जाय,

शरीर बर्फ के समान ठंडा होकर झुर्रियाँ सी पड़ जावें, और आँखें अन्दर को धंस जावें, तो ऐसे अवसर पर ईश्वर का नाम लेकर मिर्च का सेवन प्रारम्भ कराएं जिसकी अति साधारण विधि यह है कि लाल मिर्च ३ मा०, को थोड़े से पानी में घोंट कर पिलावें। बस दवा अन्दर जाने की देर है, ईश्वर कृपा से तत्क्षण शरीर गरम होकर आराम हो जायगा।

हिचकी रोकने का उपाय नं० २५

अगर हिचकी कुछ देर न रुके तो यह भी कष्ट का कारण बन जाती है। इसको रोकने के लिये हम एक सरल सा उपाय लिखते हैं, जिससे हिचकी तत्क्षण बन्द हो जाती है।

काली मिर्च को दहकते हुए कोयलों पर डालकर उसका धुआँ नाक में पहुंचाएं। बस धुआँ अन्दर जाने की देर है, तत्क्षण हिचकी रुक जायगी।

लुधाउत्पादक विधि नं० २६

जिस व्यक्ति की भूखबन्द हो गई हो, या बहुत कम लगती हो, उसको चाहिए कि लाल मिर्च का प्रयोग एक-दम बन्द करके तरकारी में काली मिर्च डालना प्रारम्भ

(२०)

नोट—यह दवा उस समय लाभ दिखाती है, जब कि रोगी अत्यधिक दुबल होकर उसका शरीर नितांत ठंडा हो गया हो। नब्ज बिल्कुल क्षीण हो गई हो, अर्थात् कि निराशजनक दशा हो गई हो। ऐसे समय में मिर्च एक उत्तम का काम देती है।

अन्य उत्तम वटी नं० २३

जो कि हैजा की अन्तिम दवा है।

पावभर लाल मिर्च को कूट कर सेर भर पानी में रात को भिगोएं और प्रातः मन्द आँच पर पकाएं। जब ३ पाव पानी जलकर केवल पावभर शेष रह जाय, तो उतार कर छान लें। और इस छाने हुए पानी को पुनः पकाएं। जब वह पानी गाढ़ा हो जाय, तो रत्ती २ की गोलियाँ बना लें। यह हैजा की अन्तिम श्रेणी की दवा है।

सेवन विधि—हैजा के रोगी को १ गोली घंटे २ के अन्तर से पानी के साथ या सूखी ही देते रहें। ईश्वरानुकम्पा से निश्चित ही आराम हो जायगा और हैजा ग्रस्त रोगी के प्राण बच जायेंगे। (अमृत)

निराशा में आशा की भलक लाल मिर्च का दिव्य गुण नं० २४

जब हैजा ग्रस्त रोगी की नब्ज बन्द सी हो जाय,

शरीर बर्फ के समान ठंडा होकर झुर्रियाँ सी पड़ जावें, और आँखें अन्दर को धंस जावें, तो ऐसे अवसर पर ईश्वर का नाम लेकर मिर्च का सेवन प्रारम्भ कराएं जिसकी अति साधारण विधि यह है कि लाल मिर्च ३ मा०, को थोड़े से पानी में घोंट कर पिलावें । बस दवा अन्दर जाने की देर है, ईश्वर कृपा से तत्क्षण शरीर गरम होकर आराम हो जायगा ।

हिचकी रोकने का उपाय नं० २५

अगर हिचकी कुछ देर न रुके तो यह भी कष्ट का कारण बन जाती है । इसको रोकने के लिये हम एक सरल सा उपाय लिखते हैं, जिससे हिचकी तत्क्षण बन्द हो जाती है ।

काली मिर्च को दहकते हुए कोयलों पर डालकर उसका धुआँ नाक में पहुंचाएं । बस धुआँ अन्दर जाने की देर है, तत्क्षण हिचकी रुक जायगी ।

जुधाउत्पादक विधि नं० २६

जिस व्यक्ति की भूखबन्द हो गई हो, या बहुत कम लगती हो, उसको चाहिए कि लाल मिर्च का प्रयोग एक-दम बन्द करके तरकारी में काली मिर्च डालना प्रारम्भ

कर दे । यद्यपि यह एक साधारण सी बात जान पड़ती है किन्तु अनुभव बता देगी कि इस साधारण सी बात ने ही उत्तमोत्तम चूर्णों से बढ़ कर काम किया ।

उदर-शूल

ईश्वर ही रक्षा करे—यह शूल बड़ा ही कष्टदायक होता है, जो कि दौरे से आता है और रोगी को लोट-पोट कर देता है । किसी प्रकार भी रोगी को चैन नहीं पड़ता इसके लिए निम्नांकित चुटकुला बहुत ही गुणकारी सिद्ध हुआ है जिससे ईश्वर कृपा से अधिकतर सौभाग्यवानों को पूरा २ लाभ हुआ है । अर्थात् एक ही मात्रा से न केवल यह कि दौरा रुक गया, अपितु भविष्य के लिए भी दौरा उठने से रुक गया । अस्तु हमारे परम मित्र मिस्त्री निजामुद्दीन को भी ईश्वर कृपा से इस दवा से आराम हो गया है ।

उदर-शूल पर मिर्च का प्रयोग नं० २७

प्रथम विधि—जब रोगी को अनुभव होने लगे, कि अब पेट में शूल प्रारम्भ हो रहा है, तो तत्काल गाय का घी ४/५ तो० कड़ाही में डालकर अंगारों पर रखें । जब घी पकने लगे, तो उसमें एक लाल मिर्च छोड़ दें । जब वह जलकर काली हो जाय, तो उस मिर्च को घी से

निकाल कर दूसरी छोड़ दें, यहाँ तक कि सात मिर्चें जल जावें । अब इसे आग से उतार कर तनिक ठंडा होने पर मिर्चों को निचोड़ कर सारा घी रोगी को समोष्ण ही पिला दें । ईश्वर कृपा से न केवल यह, कि दौरा वहीं का वहीं रुक जायगा । अपितु भविष्य में भी दौरा कभी न होगा ।

द्वितीय विधि—जब रोगी के पीड़ा प्रारम्भ हो, तो लाल मिर्च को हाथ से मसल कर गुड़ में लपेट कर खिला दें । इसी प्रकार एकदम ७ मिर्चें गोलियाँ बनाकर खिला दें । यह विधि भी हमारी अनुभूत और अत्युत्तम है ।

पहलू के रोग

हम यहां पहलू के रोग शीर्षकान्तर्गत प्लीहा शोथ और निमोनियां रोगों का वर्णन व इलाज लिखेंगे क्यों कि इन दोनों के लिए मिर्च लाभप्रद है ।

प्लीहा शोथ

यह बहुत ही बुरा रोग है । जिसे लग जाय, बस हटने का नाम ही नहीं लेता । पहले नहीं कहा जा सकता कि काली मिर्च प्लीहाशोथ के लिए अक्सीर है, हाँ लाभप्रद अवश्य है । जैसा कि उसका योग, जो कि लेप करने का है, नीचे लिखा जाता है ।

लेप का योग—नं० २८

काली मिर्च को सिरका में बारीक पीसकर ऊपर हल्का २ लेप कर दिया करें। हठ नङ्गुलगनी का कथन है, कि इससे प्लीहा शोथ को आराम हो जाता है।

जातुलजनव (निमोनियां)

यह वह रोग है जिसे सर्व साधारण ही नहीं, साधारण हकीम भी निमोनियां के नाम से पुकारते हैं। यद्यपि निमोनियां फेफड़े के शोथ को कहते हैं, जो कि बहुत ही बुरा रोग है। इसकी विशेष पहिचान यह है कि इस में कपोल पर लालिमा आ जाती है जिस ओर के फेफड़े में शोथ होती है उस ओर का नथुना फूलता हुआ प्रतीत होता है। बस अब बतलाई हुई दोनों लक्षणों से पहिचान कर लिया करें। यदि निमोनियां हो तो यही रोग समझें।

निमोनियां के लिए उत्तमलेप—नं० २९

लाल मिर्च को कूंडी आदि में डालकर और पानी मिला कर खूब पीसें। जब बिल्कुल बारीक हो जाय, तो उसको समोष्ण करके पीड़ा-स्थल पर लेप कर दें। ईश्वर कृपा से थोड़ी देर में पीड़ा रुक जायगी, शतशोः

अनुभूत प्रयोग है। अगर कुछ देर पश्चात् जलन अधिक प्रतीत हो, तो १५ मिनट पश्चात् लेप को उतार डालें।

वृक्क व मूत्राशय के रोग

वृक्क व मूत्राशय के रोग तो बहुत हैं, किन्तु हम यहां केवल वृक्क शूल व मूत्र कृच्छ्र (सुजाक) का वर्णन करना चाहते हैं। सम्भवतः आप लोग इस बात से बहुत ही घबरा गए होंगे कि लाल मिर्च सुजाक यह कैसे सम्भव हो सकता है कि मिर्च सुजाक के लिए लाभप्रद हो। किन्तु मैं जो बात लिखूंगा, ईश्वर कृपा से व्यर्थ और लचर नहीं होगी। अपितु प्रामाणिक होगी अस्तु पहले हम सुजाक का वर्णन लिखकर देहली के एक प्रख्यात चिकित्सक की घटना बताते हैं जिस से आपको मेरी बात का प्रमाण मिल जायगा किन्तु प्रारम्भ में इसमें कष्ट का सामना करना पड़ता है, अस्तु कोई कोमल प्रकृति सज्जन इसे प्रयोग करके लाभ के बजाय हानि न उठाएं। क्योंकि ऐसी वस्तुओं के गुण जरा देर में प्रगट होते हैं।

सुजाक की आश्चर्यजनक चिकित्सा

कथा—नं० ३०

(ह० बशीर अहमद सा० अन्सारी द्वारा)
जिन दिनों हम स्व० मौ० रजीउद्दीन अहमद खां

सा० के चिकित्सालय में बैठा करते थे, उन दिनों की बात है, कि एक दिन रोगियों की भारी भीड़ थी हम कुछेक शिष्य आपके पास बैठे थे, आपके विशेष मित्र भी वहां उपस्थित थे। जब रोगियों को जत्था कम हुआ, तो मित्रों की ओर आकृष्ट होकर कहने लगे, कि मैं अपने स्व० दादा जी के पास प्रैक्टिस किया करता था मेरे साथ कुछ अन्य शिष्य भी बैठा करते थे। संयोगवश एक रोगी आया, जो कहने लगा—कि मुझे दीर्घकाल से मूत्रकृच्छ्र का रोग है। सैकड़ों हकीमों से इलाज कराया, किन्तु तनिक भी लाभ न हुआ। अब कष्ट की अधिकता से विवश होकर यह चाहता हूँ कि ऐसी दवा प्रदान की जाय, जिससे या तो रोग ही मिट जाय, या मेरी आत्मा ही इस कष्ट से मुक्त हो जाय। दादा जी ने कहा कि भाई तू इलाज नहीं कर सकता—इसलिए मैं नुस्खा नहीं बताता। रोगी के आग्रह पर आपने कहा—मैं जो कहूँगा, तू उसे कदापि पूरा न कर सकेगा। फिर बताने से क्या लाभ ? वह बोला—कि आप यदि मुझे विष भी देंगे, वह भी मैं सर्प खालूँगा। अन्त में आप ने बताया—कि अच्छा आज प्रातः सायं १-१ तो० लालमिर्च घोंट छानकर, पीकर, कल फिर आना। अतः वह चला गया, और प्रातः फिर आया, किन्तु बुरी दशा थी

कदम डगमगा रहे थे, दादा साब ने देखते ही आज्ञा दी कि आज फिर प्रातः सायं लाल मिर्च ही घोट कर पिओ उसने भी शायद प्राणों से हाथ धो रक्खे थे जो कि दूसरे दिन भी मिर्च पीकर तीसरे दिन पुनः हाजिर हुआ। किन्तु दो आदमियों को पकड़ कर बड़ी कठिनता से आया था। और पीड़ा के मारे चिल्ला रहा था। दादा जी ने तनिक भी परवाह न करते हुए फिर कह दिया कि फिर मिर्चें पियो। हम चकित थे कि आखिर इन्हें मिर्चें पिला कर क्यों तंग किया जा रहा है। शायद परीक्षा लेते हैं या क्या अभिप्राय है? संक्षिप्त यह कि जब पुनः रोगी आया तो वह स्वयं चलकर न आसका, अपितु पालकी में बिठाकर लाया गया। टांगे फैलाए हुए हृदय विदारक स्वर में हाय २ कर रहा था। मूत्र में रक्त आता था। और प्रत्येक बुंद गोया मौत की निशानी थी। अब दादा जी ने एक साधारण नुस्खा लिख दिया। कि इसको तीन दिन पी के आना। चूंकि दादाजी को विश्वास था कि अब रोगी स्वस्थ होकर ही आयेगा। अतः रोगी तीन दिन के बाद आया, तों उसे बिलकुल कष्ट न था। और वह खुश था अतः हमारी ओर आकृष्ट होकर कहने लगे कि बताओ रोगी को पहिले आराम क्यों न आता था ? और

मिर्च के सेवन से क्यों आराम हो गया ? हम सब चुप थे अन्त में आपको क्रोध आ गया और नौकर से बोले कि इन सब मूर्खों को बाहर निकाल दो । अतः नौकर ने हम सबको निकाल बाहर दिया । दूसरे दिन क्रोध शांति होने पर कहने लगे देखो इस मोटी बात पर हकीम लोग ध्यान नहीं देते कि घाव पर ४० दिन के बाद एक भिल्ली पैदा हो जाती है जिसको नासूर कहते हैं । जिस पर कोई साधारण दवा प्रभाव नहीं करती । अतः पहिले सफेद भिल्ली को उड़ा कर घाव साफ कर लेना चाहिए । फिर कोई दवा लगाई जाय ताकि घाव पर कुछ असर करे । और भिल्ली उड़ाने की एक ही विधि है कि घाव फिर से ताजा बना दिया जाय । इसलिए इसे मिर्च पिलाई गई थीं । जो कि सफल सिद्ध हुई ।

लाल मिर्च का तेल नं० ३१

यह तेल अद्भुत प्रभावक है । पुराने से पुराना सुजाक जो किसी प्रकार भी ठीक होने में न आता हो ईश्वर कृपा से इससे जड़मूल से उड़ जाता है ।

मिर्च के बीज ७ छटाँक, एक पाव पानी में भिगोकर रात भर रख छोड़े । फिर किसी उत्तम दढ़ आतशी शीशी में पाताल मंत्र द्वारा तेल निकालें ।

सेवन विधि—मात्रा एक बून्द बताशा पर डालकर बकरी के दूध की लस्सी पिलावें । अगर पीप बहुत अधिक आती हो तो अत्र रेशम की राख १ माशा पहिले खिलाकर फिर दवा और लस्सी पिलावें । अगर औषधिके सेवन काल में मूत्र अधिक जलन से आए तो उसे सहन करते रहें । ईश्वर कृपा से स्वतः ही आराम हो जायेगा ।

वृक्क शूल नं० ३२

यह बड़ा कष्टप्रद शूल है । रोगी महान कष्ट पाता है इसकी पहिचान यह है कि यह पीड़ा वृक्कों से उठकर टीसों जांघों और फोों में निकलती है । मूत्र व मल रुकावट से आने लगता है । अगर यह शूल पथरी के कारण न हो तो निम्नांकित योग लाभ प्रद है—

योग—लाल मिर्च को भली भांति पानी में पीस कर पाडी स्थल पर लेप करें । ईश्वर कृपा से पीड़ा बन्द हो जायगी ।

शुभ सूचना—पथरी को कण कण करके निकाल देने वाले कई उत्तम योग हमने देहाती अनुभूत योग संग्रह में लिख दिए हैं । जो सज्जन चाहें मंगा कर लाभ उठावें ।

ज्वर प्रकरण

ज्वरों के असंख्य भेद हैं जिनमें से मिर्च तिजारी और

(३०)

चौथिया के लिए औषधिवत् प्रयुक्त होती है। अस्तु हम कुछेक योग लिखते हैं।

तिजारी या चौथिया की अकसीर नं० ३३

शिगरफ रुमी १ तोला को खरल में डालकर उसमें १-१ काली मिर्च डालते और खरल करते जाय। जब ४ तोला मिर्च पीसी जा चुकें तो फिर उसमें नीबू का रस डालकर खरल करना प्रारम्भ करें इसी प्रकार ४ दिन पीसें और काली मिर्च के समान गोलियां बनालें।

सेवन विधि—तिजारी ज्वर के लिए ३ गोलियाँ ज्वार गमन से १ घंटा पूर्व गरम पानी से दें। और चौथिया के ज्वर में चार गोलियां खिलोएं। ईश्वर की कृपा से उसी दिन ज्वर की पारी रुक जायगी। नचेत दूसरी बारी पुनः दें।

दैनिक ज्वर—नं० ३४

यदि ज्वर नित्य ही आता हो तो उसके लिए भी उपरोक्त गोलियां परम लाभप्रद हैं। किन्तु दैनिक ज्वर में ज्वारागमन से एक घंटा पूर्व गोलियाँ खिलानी चाहिए।

बारी रोकने वाली गोली—नं० ३५

कुनैन और मिर्च दोनों समपरिमाण भाग लेकर पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लें। और ज्वर रोगी को बारी

आने से पूर्व खिला दें। यद्यपि कुनैन अकेली भी ज्वर के लिए अकसीर मानी जाती है। किन्तु मिर्च के मिश्रण से प्रभाव अत्यधिक बढ़ जाता है।

ज्वर का जाड़ा रोकने वाली दवा—नं० ३६

ईश्वर बचाए—ज्वर का जाड़ा बहुत बुरी बला है। जो कि गर्म से गम कपड़ा ओढ़ने पर भी नहीं जा सकता नीचे लिखे योग से तत्काल जाड़ा छूट जाता है।

योग—काली मिर्च ३ मा० को २ तो० घी में पीसकर मलने से जाड़ा रुक जाता है।

कुनैन का प्रतिनिधि—नं० ३७

(ज्वरो के लिए महा सन्यासी औषधि) यह योग, एक अवधिपूर्व मेरो दृष्टि से गुजरा था, लेकिन नहीं कहा जा सकता है। कहां देखा था ? खैर योग इस प्रकार है—काली मिर्च ३ तो० खरल में डालकर एक मिनट भी बन्द किए बिना खरल करते रहें, यहां तक की पूरे ४८ घंटे खरल करें। और एक शीशी में संभाल रखें। मात्रा—एक रत्ती से २ रत्ती है। ज्वरों के लिए अकसीरी दवा है। खांड में रखकर खिलाएं। कहते हैं, कि निरन्तर पीसने से इस में एक विशेष उष्णता उत्पन्न हो जाती है।

इसकारण इसका प्रभाव बढ़ जाता है ।

उंगली पर दवा बांधने से ज्वर न चढ़े ।

ज्वर नाशक जादूई दवा—नं० ३८

कई वर्ष पूर्व हमारे यहाँ मौसमी ज्वर का जोर हुआ । प्रायः तीसरे दिन का ज्वर अधिक फैला । मुझे किसी कार्य-वश पटियाला के एक ऐसे गाँव में जाना पड़ा, जिसमें किसी अत्तार की दूकान न थी । अतः मैंने ज्वर रोगियों पर यही दवा प्रयोग की । ईश्वर कृपासे हर जगह सफल हुई । अर्थात् कि अनुभूतानुभूत है ।

योग—उनग लाल मिर्च पानी में भिगों कर खूब अच्छी प्रकार घोट लें और बाएँ हाथ की तर्जनी अंगुली पर लेप करके मजबूत यही बांधें और पट्टी को पानी से तर रखें यद्यपि अंगुली में टीसें निकलने लगेंगी, और हृदय धड़केगा, किन्तु ज्वर न होगा । यदि प्रथम बार आराम हो तो पुनः यही क्रिया करें ।

नोट—यह क्रिया ज्वारागमन से २ घंटा पूर्व करनी चाहिए । ईश्वर कृपासे कभी निष्फल न जायगी ।

तिजरी के लिए अक्सीर—नं० ३९

(श्री ठाकुर दत्त सा० शर्मा वैद्य)

यह योग उक्त महोदय के यहां से प्रचुरता से निकलता

ता है। एक अवधि पूर्व देश उपकारक वालों ने आपको योग प्रकट करने को बाध्य किया, तो आपने बता दिया। यद्यपि उपरोक्त योग ही है, किन्तु सेवनविधि में अन्तर जो कि यह है।

योग—लाल मिर्च को पानी में भली भांति बारीक पीसकर दोनों हाथों के दसों नाखूनों पर ज्वरागमन से एक घंटा पूर्व लेप कर दें। ईश्वरेच्छा ज्वर न होगा।

तत्क्षण ज्वरनाशकयोग—नं० ४०

प्रारम्भिक पृष्ठों में प्रतिश्याय के प्रारम्भ में जो योग, स्वादिष्ट चटनी के नाम से लिखा गया है। उस से ईश्वर की कृपा से ज्वर भी तत्काल दूर हो जाता है। योग पीछे देखलें।

मीठी कुनैन

हमारी फार्मसी का चलता हुआ योग है। यदि आप इस योग को सही २ जानना चाहें, तो देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली से 'देहाती अनुभूत योग संग्रह', 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा', नामक पुस्तकें मगावें।

विषैले जन्तुओं का इलाज

जिस प्रकार विषैले जंतु सर्व व्याप्त हैं। उसी प्रकार उनके विषघ्न अगद भी ईश्वर ने हर जगह पैदा कर दिए हैं, अतः जिन लोगों ने हमारी पूर्वोक्त पुस्तकों को पढ़ा है, वे जानते हैं, कि हन्दी, लहसुन, प्याज, नमक, रीठा, नीम,

कीकर सभी विष दूर करने में अगद हैं। अगर फिर भी हम उन से लाभ न उठाएं, तो हमारा ही दुर्भाग्य है। अब मिर्च का प्रभाव भी देखिए।

सर्व विष हारी आश्चर्यजनक सुरमा-नं० ४१

यह योग 'देहती एकौषधि चिकित्सा, में भी अंकित है। जो कि खां बहादुर सैयद मुजफ्फर अलीद्वारा प्रदत्त है। आपका कथन है, कि यह योग एक दोस्त ने बताया था, जो कि अधिक बार का परीक्षित है। योग इस प्रकार है:—

योग—लाल मिर्च को खरल में डालकर यहां तक खरल करें, कि सुरमा की भांति सूक्ष्म हो जाय। आवश्यकता के समय १-१ सलाई ईश्वर का नाम लेकर आंखों में डाल दें। प्रभु कृपा से विष का प्रभाव दूर होगा। आनन्द यह कि रोगी को विष के कारण मिर्चों की तेजी प्रतीत न होगी।

सर्प दंश की मूर्च्छा दूरकरने का उपाय-नं० ४२

यद्यपि उपरोक्त प्रयोग में बेहोशी दूर करने में भी लाभप्रद है। किन्तु पिसी हुई लाल मिर्च की चुटकी रोगी की जुवान पर डालना भी उसे फौरन होश में लाने की उत्तम विधि है।

वृश्चिक दंश के लिए-नं० ४३

जिस प्रकार विष के अनुसार सांप अनेक प्रकार के होते हैं, उसी प्रकार बिच्छुओं की भी असंख्य किस्में हैं।

कुछ कम विष वाले—कुछ अधिक वाले । अतः यदि एक योग से लाभ न हो, तो योग को गलत न समझ कर यह समझलें कि बिच्छू अधिक जहरीला है । अतः फौरन दूसरा योग सेवन करें ।

योग—लाल किर्च को अति सूक्ष्म पीसकर उसमें शहद मिलाकर दंशित स्थान पर लेपकर दें । प्रभुदया से तत्क्षण विष दूर हो जायगा ।

कुत्ते काटे का इलाज—नं० ४४

यह न समझिए—कि पागल कुत्ता ही अधिक जहरीला होता है, अपितु कोई कोई साधारण कुत्ते भी बड़े जहरीले होते हैं । अस्तु यदि कभी कुत्ता काटले तो घाव पर साबुत मिर्च बांध दें । यद्यपि कुछ चुभन अवश्य होगी, किन्तु ईश्वर कृपा से सारा विष दूर हो जायगा । अस्तु कभी आलस्थ या उपेक्षा न करें ।

लाजवाब धूनि—नं० ४५

जिससे सारे जहरीले कीड़े, मच्छर आदि भाग जाते हैं यदि वायु विकृतिके दिनों में लाल मिर्चों की धूनि की जाय, तो उससे तमाम जहरीले कीड़े, मच्छर आदि मर जाते हैं । विशेषकर हैजा व विषमज्वर के दिनों में यह धूनि अवश्य देनी चाहिए । इससे हवा शुद्ध हो जाती है । कोई कोई लोग मिर्च को पानी में पीसकर दीवारों पर छिड़क देते हैं ।

फोड़ा—फुन्सी—नं० ४६

जब फोड़ा फुन्सी निकलता जान पड़े, तो सफेद या

लाल मिर्च को अति सूक्ष्म पीसकर ऊपर लेप कर दें। ईश्वर कृपा से दो लेपों में उठते ही मिट जायेंगे। हाँ जब फोड़ा पकने लग जाय, तो उस समय मिर्च से कोई लाभ नहीं।

आग की भांति जलने वाली फुंसी--नं० ४७

फोड़े फुन्सियों की अगणित किस्में हैं, जिनमें एक फुन्सी ऐसी भी होती है, जो कि आग की तरह जलने लगती है। उसके लिए लाल मिर्च और चूल्हे की भटोर अति सूक्ष्म पीसकर पानी मिलाकर फिर घोंटें।

जबउत्तम लेप सा हो जाय, तो ऊपर लेप करें। ईश्वर कृपा से मिनट भर में जलन बन्द होकर ऐसा प्रीति होगा, मानों कि जलते हुए स्थान पर बर्फ का टुकड़ा रख दिया गया है। —(सदरिया)

शरीराङ्ग का सुन्न पड़ जाना--नं० ४८

किसी २ समय हाथ पांव आदि का कोई, अंग सुन्न पड़ जाता है, उस को दूर करने के लिए लाल मिर्च अत्युत्तम वस्तु है।

योग—लाल मिर्च को सूक्ष्म पीसकर ऊपर लेप कर दें। कुछ दिनों में आराम हो जायगा।

मिर्च से बनने वाली भस्म

मिर्च से कोई २ भस्म अत्युत्तम तैयार होती है। जिनका वर्णन निम्न पंक्तियों में किया जाता है। भस्मों के प्रेमी परीक्षा करके लाभ उठावें।

रजत—भस्म--नं० ४६

रजत-भस्म १ तो० जोकि दुअन्नी से कुछ बारीक हो बनाकर पाव भर लाल मिर्च की लुगदी के बीच रखकर ऊपर से २ सेर खदर का कपड़ा लपेट दें। और निर्वात स्थान में आग दे दें। आशा है कि प्रथम बार में ही भस्म बन जायगी। अन्यथा एक आंच और देलें।

सेवन विधि—मात्रा आधी रत्ती मक्खन में लपेटकर खिलाया करें। शक्तिप्रद है। (ईल्मो अम्ल कुशता जात)

सिला या कलाई--नं० ५०

कलाई शुद्ध ६ मा०, पारा शुद्ध ३ मा०। कलाई को आग पर पिघला कर उतार लें, फिर उसमें १ तो० पिसी हुई काली मिर्च मिलाकर इतना खरल करें, कि मक्खनवत हो जाय। कम से कम १२ निरन्तर पिसाई करें। बस तैयार है।

सेवन विधि-- मात्रा १ माशा मक्खन में लपेट कर खिला दें।

लाभ-- जिगर की बड़ी हुई गर्मी के लिए परम लाभदायक है। यरकान को ६-७ दिन में पूरी तरह आराम कर देता है। (इल्मो अमल कुशता)

शिंंगरफ-भस्म नं० ५१

लाल मिर्च की लकड़ियां लेकर जलालें। और उसकी लगभग ५ सेर राख प्राप्त करें। इस राख को

कोरी हांडि में आधी के लगभग भरकर खूब दबा दें। फिर उसके मध्य में शिंगारफ रूमी की ३ तो० की डली रख दें। और फिर शेष राख भी उपर से डाल दें। फिर हांडी के मुंह को सकोरे से बन्द करके मुंह को गुंधे हुए आटे से बन्द कर दें। और चूल्हे पर चढ़ाकर नीचे ५ सेर बेठी की लकड़ियों की मन्द २ आंच दें। फिर हांडी के शीतल होने पर निकालें। ईश्वर कृपा से शिंगारफ राख के अन्दर से ही खिली निकलेगी। उसे निकालकर दहकते हुए कोयले पर डालकर देखें, यदि धुआं न आए तो सूक्ष्म पीसकर रखलें।

सेवन विधि—मात्रा एक चावल से २ चावल तक मक्खन या खांड आदि में दिया करें।

लाभ—अर्द्धंगि, गठिया, जोड़ों की पीड़ा के लिए परम लाभदायक है। शरीरिक शक्ति बढ़ाने में भी अद्वितीय है। (इसरारे सदरी)

शिंगरफ भस्मकी सन्यासी विधि नं० ५२

(श्री ह० मौ० अब्दुलरहीम साहब द्वारा)

लाल मिर्चें ऐसी दशा में लें, जो कि बिल्कुल ताजा हो। उनको कूटकर पाव भर पानी निकाल लें। और १ तो० शिंगरफ लेकर बूंद २ पानी से खरल करते रहें। यहां तक की सारा पानी शोष्ण हो जाय अब इसकी टिकिया बनाकर किसी कूंजा में गिले हिकमत करके यानी कपरौटी करके निर्वात स्थान में ५ सेर की आग दें। भस्म बन जायगी।

मात्रा—आधी रत्ती मक्खन में। श्वांस, खांसी, पुंसक दुबलता, आदि के लिए अदभुत औषधि है।

पारा भस्म की सन्यासी विधि—नं० ५३

पारा की भस्म बनाना कोई आसान काम नहीं, उम्र गुजर जाती है, किन्तु फिर भी बनाना नहीं आता क्यों-कि यह एक ऐसी वस्तु है, जो कि आकर सन्तोष जनक रूप में बनजाय, तो शक्तियों से भर पूर कर देती है, और यह भस्म सभी भस्मों की महारानी कहलाती है। किन्तु कमी रहने की दशा में सेवन कर्त्ता से शरीर की विकृत कर देती है अस्तु सदैव संतुष्ट होने पर ही सेवन करें। सर्वप्रथम पारा को खूब परीश्रम से शुद्ध कर लेना चाहिए। अशुद्ध पारे की भस्म कभी न बनाएं।

निर्माण-विधि

यह अद्वितीय विधि हमें स्वामी लक्ष्मण जी से प्राप्त हुई है। जिस के अविष्कारक स्वामी जी के पूज्य पिता जी हैं। यद्यपि वे तो अन्य सन्यासियों की भांति कभी योग प्रकट नहीं करते, किन्तु हम अपने स्वभाव से वियश हैं। योग यह है।

योग—लाल मिर्च जो अभी तरी में ही हो, लेकर उनको कूटकर पाव भर पानी निकाल लें। और उत्तम शुद्ध पारा १ तो० को चीनी के खरल में डालकर लाल मिर्च के पानी की सहायता से खरल करते रहें। जब सारा पानी शोष्ण हो जाय, तो टिकिया बनाकर कूजे में सराव

सस्पुट कर के ४ सेर उपलों की आंच दें। लाल रंग की भस्म बन जायगी। पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा—१ चावल से ४ चावल तक मक्खन के या मलाई के साथ खिलाएं। अपूर्व शक्ति वर्द्धक है।

अगद मिर्च प्रयोग—नं० ५४

यह योग सन्यासी कृष्णानन्द जी का है, जो सर्प-विष दूर करने के लिए अगद तुल्य हैं।

योग—श्वेत मिर्च (भूरी मिर्च) २ तो० जो कि जौकुट कर के चीनी के प्याले में डालकर उन पर मोरका अंडा तोड़ कर उसके अन्दर जो कुछ निकले, उस में डाल दें और प्याले को ढककर सुरक्षित रख दें। फिर ४० दिन बाद देखें। अगर आर्द्रता शेष न हो, तो ठीक, नीचे कुछ दिनों तक और रहने दें। यहां तक कि मिर्च का चूर्ण व अण्डा विन्कुल सूख जाय। फिर उसको बारीक पीसकर शीशी में रखें। एक पीली २ अकसीर होगी। उससे ऐसे २ रोगी भी ठीक हो गए हैं, जिन्हें लोगों ने मुर्दा समझ लिया था।

सेवन विधि—दंशित स्थान पर पच्छ लगाकर ऊपर दवा मल दें। यदि विष फैला नहीं होगा, तो दवा मलते ही १५ मिन. में विष उतर जायगा।

